घोघरडीहा प्रखंड स्वराज्य विकास संघ जगतपुर,मधुबनी,बिहार
मेघ पाईन अभियान
केस स्टडी वर्ष 2010

"वर्षा जल अमृत समान, ये देती सबको जीवन दान"

परिचय:-

बीणा देवी के पति फुले चौपाल, उम्र-38वर्ष,गाँव- दैयाखरवार,पंचायत-गंगापूर,प्रखण्ड-लखनौर,जिला- मधुबनी ,बिहार,दलित जातिमहिला - 3, पुरुष - 3 कुल - 6 सदस्यके साथ गाँव में मौसमी मजदुरी किया करती थी । तथा इनके पति फुले चौपाल दिल्ली में मजदुरी करते हैं तथा बीणा देवी खुद किसी तरह गरीबी के हालात में अपने बच्चों का लालन पालन करती थी । आज से तीन साल पहले तक बीणा देवी शरीर में जलन,सरदर्द,आँख मे जलन एवं इनका बच्चा सर्दी,जुकाम न्युमोनिया एवं पेट के बिमारी से पिडित रहा करता था । अपने परिवार का 60% आमदनी इलाज में खर्च कर देती थी । प्रत्येक महिना लगभग 500 स 700 रु. इलाज में खर्च कर देती थी ।

2007 की बात है, एक बार बणिा देवी एवं उनका दोनो लडका एक साथ बिमार पड गयी । झंझारपुर डाक्टर के पास जाते जाते इनकी आर्थिक स्थिति काफी खराब हो गयी, बीणा देवी स्वंय बिछाबन पकड ली तथा आर्थिक रुप से कमजोर होने के कारण अपने एवं बच्चों के जिन्दगी से निराश हो गयी थी ।

गाँव की स्थिति

दैयाखरवार गाँव, जिला मुख्यालय से 40 कि. मी. दूर, झंझारपुर से 5 कि. मी. दूर तथा कमला नदी के तट पर अवस्थित हे । यह गाँव में दस वर्ष पहले तक प्रत्येक साल बाढ आती थी तथा यहाँ के जिविका को पुर्णत: प्रभावित करके चली जाती । परन्तु जबसे नदी का तटबंध बना है बाढ से बचाव होती है । इस गाँव में उच्च एवं निम्न दोनो जाति के लोग रहते हैं । यहाँ के

दक्षिणी एवं पूर्वी भाग में अभी भी जलजमाव रहता है । यहाँ धान के सिवा दुसरा अन्य फसल नहीं ऊपजाया जा सकता है ।पुर्व मे गाँव की शिक्षा की स्थिति बहुत ही खराब थी। सिर्फ उच्च जाति के लोग ही अपने बच्चे को पढाते थे ।आज का विकास का दौर एवं सरकार का प्रयास से सभी शिक्षा के तरफ आकर्षित हुए हैं । शिक्षा एवं जनचेतना के अभाव के कारण इस गाँव में हमेशा गंदगी भरी रहती थी । जिसके कारण व्यक्ति जलजनित बिमारी से ग्रसित रहते थे ।

प्रयास एवं उपलब्धि

2007 में इस गाँव में घोघरडीहा प्रखण्ड स्वराज्य विकास संघ,जगतपुर,मधुबनी एवं मेघ पाइन अभियान के द्वारा समग्र जल प्रबंधन पर विभिन्न चेतनामूलक कार्यक्रम का शुरुआत हुई तो चर्चा के दौरान एक समिति बनाकर दुषित जल एवं गंदगी से होने बिमारी,परेशानी एवं इसका उपाय के बारे में विस्तृत जानकारी दिया गया । एक बैठक के दौरान कुछ लोग बीणा देवी एवं उनके बच्चे के बिमारी की चर्चा की । उसी दिन कार्यकर्ता द्वारा इनके घर इनसे मिलने गये । इन्हें दुषित जल एवं गंदगी से होने बिमारी,परेशानी एवं इसका उपाय के बारे में विस्तृत जानकारी दिये तथा तत्काल बर्षा जल सेवन करने के लिए प्रेरित किया । उसी वक्त समिति के माध्यम से **GPSVS/MPA** के द्वारा 40 लीटर का माठ उपलब्ध कर उसमे 25 लीटर वर्षाजल उपलब्ध कराकर एक गिलास उसे पिला दिया गया तथा इनके परिवार को सलाह दिया गया की जब भी पानी माँगे तो सिर्फ वर्षाजल ही देना । इस तरह चार दिन बाद बीणा देवी चलने-फिरने लगी तब बिश्वास हुआ कि वर्षाजल शुद्ध जल के साथ दवा का भी काम करता है और अपने बिमार बच्चे को भी दवा के साथ वर्षाजल देना शुरु कर दी । धीरे - धीरे बच्चे भी ठीक होने लगा तथा तीन महिने के अन्दर ही खुद व इनका बच्चे ठीक होकर सभी काम करने लगे । आज वर्षाजल पर विश्वास हो गया है कि अब पुरे परिवार बरसात भर वर्षाजल जमा करते हैं, सेवन करते हैं तथा भविष्य के लिए भी 10 लीटर बचा कर रखती है । वर्षाजल का अभाव होने पर मटका फिल्टर का पानी पीती है । कहती है *"अब मै डाक्टर के नहीं के बराबर जाती हुँ । अब जो भी बचत होती है वह मै अपने बच्चों के शिक्षा एवं विकास में लगाती हुँ । 3 वर्ष पहले मेरा 8 वर्ष का लडका मनोज सिरियस बिमार हो गया था मैं उसका जिन्दा रहने की आशा छोड चुकी थी परन्तु मैं* **GPSVS/MPA** *को धन्यवाद देती हुँ कि वर्षा जल एवं मटकाफिल्टर का पानी से मेरा बच्चा ठीक हो गया । यह पानी पानी नहीं अमृत है ।"*

सीख

शुद्ध जल का प्रयोग से मनुष्य 80% बिमारी से बचा जा सकता है तथा पैसा का भी बचत कर आर्थिक रुप से सूदृढ बन सकता है ।